आईएसएएए के मुताबिक भारत के बायोटेक फसल क्षेत्र में १०० प्रतिशत की वृद्धि

नई दिल्ली, १३ जनवरी २००४ - दुनिया भर के किसानों ने लगातार सातवें वर्ष बायोटेक फसल लगाने में वृद्धि की दो अंकों की रफ्तार जारी रखी और २००३ का कुल योग १५ प्रतिशत बढ़कर ६ करोड़ ७७ लाख हेक्टेयर हो गया। इंटरनेशनल सर्विस फॉर दि एक्विजिशन ऑफ एग्री बायोटेक एपलिकेशंस (आईएसएएए - www.isaaa.org) ने आज यहां जारी एक रिपोर्ट में यह जानकारी दी है। इस वृद्धि में ब्राजील में ३० लाख हेक्टेयर में सोयाबीन के रोपण का अनुमान शामिल है। दरअसल वर्ष २००३ के दौरान पहली बार इतने बड़े क्षेत्र में सोयाबीन के रोपण की अनुमति दी गई है। ब्रांजील में असल में जितने बड़े क्षेत्र में यह रोपण होगा वह काफी ज्यादा हो सकता है।

रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि १८ देशों में ७० लाख किसान अब बायोटेक फसल लगाते हैं। यह विकासशील देशों के गरीब किसानों का ८५% से ज्यादा है। २००२ में ऐसे किसानों की संख्या १६ देशों में ६० लाख थी। दुनिया भर के बायोटेक फसल क्षेत्र में तकरीबन एक तिहाई विकासशील देशों में है। पिछले साल यह एक चौथाई था।

आईएसएएए के अध्यक्ष और संस्थापक क्लाइव जेम्स ने कहा, "किसानों ने अपना मन बना लिया है। आर्थिक, पर्यावरणनीय, सामाजिक लाभ के साथ-साथ इसमें खेती संबंधी लाभ भी है और इसलिए वे तेजी से बायोटेक फसल को अपनाना जारी रख रहे हैं।"

रिपोर्ट के मुताबिक दुनिया भर में बायोटेक फसल क्षेत्र के ९९% विस्तार के लिए जिम्मेदार देशों की संख्या २००२ में चार से बढ़कर अब छह हो गई है। बायोटेक फसल के अग्रणी उत्पादकों में अमेरिका, अर्जेन्टीना, कनाडा और चीन रहे हैं। अब इनमें ब्राजील व दक्षिण अफ्रीका भी जुड़ गए हैं। चीन और दक्षिण अफ्रीका में सबसे ज्यादा वर्षिक वृद्धि हुई है। दोनों देशों ने २००२ के मुकाबले एक तिहाई ज्यादा क्षेत्र में बायोटेक फसल लगाई है।

५०,००० से ज्यादा हेक्टेयर में बायोटेक फसल लगाने वाले बाकी बचे शिखर के देशों में ऑस्ट्रेलिया, भारत, रोमानिया और उरुग्वे शामिल है। अन्य आठ देशों में प्रत्येक ५०,००० हेक्टेयर तक में बायोटेक फसल लगाते हैं।

भारत में जितने हेक्टेयर में बायोटेक फसल लगाई जाती है उसमें १०० प्रतिशत की वृद्धि बीटी कॉटन के क्षेत्र में भारी वृद्धि से हुई है। भारत में बायोटेक कॉटन पहली बार २००२ में लगाया गया था। २००३ में इसने इस क्षेत्र को लगभग दूना करके १,००,००० हेक्टेयर कर दिया।

जेम्स ने कहा, "यूरोपीय यूनियन में इस समय चल रही चर्चा के बावजूद इस बात के चौकस आशावाद के कारण हैं कि दुनिया भर में बायोटेक फसल का क्षेत्र और इन्हें लगाने वाले किसानों की संख्या २००४ में तथा उसके बाद भी बढ़ना जारी रहेगा।"

बीटी कॉटन क्षेत्र में अच्छा लाभ होने से एशिया के अन्य जगहों में चीन ने बायोटेक फसल लगाए जाने वाले हेक्टेयर में ३३ प्रतिशत की वृद्धि की। २००३ में कुल २८ लाख हेक्टेयर में बीटी कॉटन उपजाया गया था। यह २००२ के २१ लाख हेक्टेयर से ज्यादा है।

बायोटेक सोयाबीन वाले हेक्टेयर दुनिया भर में सबसे ज्यादा हैं। लगभग १३ प्रतिशत की वृद्धि से यह ४ करोड़ १४ लाख हेक्टेयर में है। दुनिया भर में ५५ प्रतिशत में सोयाबीन है। नई किस्मों और देशों में मंजूरी मिलने से बायोटेक मक्के के रोपण वाले क्षेत्र में सबसे बड़ी वृद्धि हुई है। २५ प्रतिशत की वृद्धि के बाद दुनिया भर में १ करोड़ ५५ लाख हेक्टेयर में इसकी फसल लगाई गई है। यह दुनिया भर में जितने क्षेत्र में मक्का लगाया गया है उसका ११ प्रतिशत है। आईएसएएए का अनुमान है कि अगले पांच वर्षों में २५ या ज्यादा देशों में एक करोड़ किसान १० करोड़ हेक्टेयर में बायोटेक फसल लगाएंगे। रिपोर्ट के मुताबिक, दुनिया भर के बायोटेक फसल का बाजार मूल्य इस साल के लगभग ४.५ अरब डालर से बढ़कर २००५ तक ५ अरब डालर हो जाने का अनुमान है।

इंटरनेशनल सर्विस फॉर दि एक्विजिशन ऑफ एग्री बायोटेक एपलिकेशंस (आईएसएएए) मुनाफा कमाने वाला संगठन नहीं है। केंद्रों का इसका अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क है और इसे इस तरह डिजाइन किया गया है कि यह कॉर्प बायोटेक्नालाजी एपलिकेशनों की साझेदारी से भूख और गरीबी मिटाने में योगदान कर सके। आईएसएएए के अध्यक्ष सह संस्थापक क्लाइव जेम्स पिछले २५ वर्षों से एशिया, लातिन अमेरिका और अफ्रीका के विकासशील देशों में रहे हैं और यहां काम किया है और कृषि अनुसंधान तथा विकास से जुड़े मुद्दों के क्षेत्र में परिश्रम किया है। हाल के समय में वे कॉर्प बायोटेक्नालाजी और दुनिया भर की आहार सुरक्षा पर ध्यान दे रहे हैं।

For further information, please contact:
Achal Paul, Rishu Monga, Surbhi Khandelwal
e.Lexicon Public Relations & Corporate Consultants Ltd.
Tel: 26234726, 26236603, 26223099
Fax: 26234725
e-mail: info@e-lexiconpr.com